अन्नम्भट्टप्रणीत

# तर्क-संग्रह

स्वोपज्ञ व्याख्या तर्कदीपिका सहित

व्याख्याकार
**डा० दयानन्द भार्गव**
संस्कृत-प्राध्यापक
रामजस कॉलिज, दिल्ली

Dayanand Bhargava
Professor and Head
Department of Sanskrit
University of Jodhpur
JODHPUR

**मोतीलाल बनारसीदास**
दिल्ली :: पटना :: वाराणसी

© मोतीलाल बनारसीदास

प्रधान कार्यालय : बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-७
शाखाएं : १. चौक, वाराणसी (उ० प्र०)
२. अशोक राजपथ, पटना–४

प्रथम संस्करण
१९७१
मूल्य दस रुपए

श्रीसुन्दरलाल जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७ द्वारा प्रकाशित तथा श्री शान्तिलाल जैन, श्री जैनेन्द्र प्रेस, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७ द्वारा मुद्रित

# आभार

मैं संस्कृत-विद्यापीठ, दिल्ली के प्रवक्ता वेदान्ताचार्य, न्यायशास्त्री पण्डित गोपानन्द जी झा का इदम्प्रथमतया आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि को अक्षरशः देखा और अनेक उपयोगी संशोधन किये। मेरे मित्र सर्वदर्शनाचार्य श्री हर्षकुमार एम० ए०, संस्कृत-प्राध्यापक, सेंट स्टीफन्स कॉलिज, दिल्ली ने अपने शोधग्रन्थ के प्रथम अध्याय की पाण्डुलिपि का प्रयोग इस ग्रन्थ की भूमिका लिखने के लिए करने की अनुमति मुझे दी, तदर्थ मैं उनका कृतज्ञ हूँ। मेरे अन्य ग्रन्थों की भांति इस ग्रन्थ के भी प्रकाशन तथा मुद्रण में श्री सुन्दरलाल जी, प्रोप्राईटर मोतीलाल बनारसीदास, ने तथा श्री जैनेन्द्र प्रेस के अधिकारियों ने एवं प्रूफ-रीडिंग में श्री जगदीशलाल जी शास्त्री एम० ए० ने जो तत्परता दिखाई उसके बिना यह ग्रन्थ वर्तमान रूप नहीं प्राप्त कर सकता था। मेरे शोधछात्र श्री मोहनचन्द एम० ए० ने इस ग्रन्थ की अनुक्रमणिकायें तैयार कीं, तदर्थ उसका शुभाशंसन।

अन्ततः मैं श्री यशवन्त वासुदेव अथल्ये तथा श्री महादेव राजाराम बोडास का आभार प्रकट करता हूँ जिनके तर्कसंग्रह के अँग्रेजी टिप्पणों पर मेरी यह हिन्दी-व्याख्या मुख्यतः आधृत है।

रामजस कॉलिज, दिल्ली।
देवोत्थापनी एकादशी, सम्वत् २०२७
९–११–१९७०.

दयानन्द भार्गव

Dayanand Bhargava
Professor and Head
Department of Sanskrit
University of Jodhpur
JODHPUR

# विषय-सूचि


आभार iii

विषय-सूचि v–x

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूचि xi–xi

सहायक-पुस्तक-सूचि xiii

अवतरणिका xv–xxii

नैयायिक और वैशेषिक तथा बौद्ध और जैन लेखक xxiii

**मंगलाचरण**–१, मंगलाचरण का कारण २, अनुबन्ध चतुष्टय ३।

**सप्तपदार्थ**–४, पदार्थ का अर्थ ४, अरस्तु के दस पदार्थ ४–५, अन्य दर्शनों में पदार्थों की संख्या ५, शक्ति अष्टम पदार्थ नहीं ५–६।

**नौ द्रव्य**–६, द्रव्य का लक्षण ६–७, तमस् दसवां द्रव्य नहीं ७–८, लक्षण के तीन दोष ८।

**चौबीसगुण**–९, गुण का लक्षण ९–१०, गुणों की संख्या १०–११, किस द्रव्य में कितने गुण हैं ११, सामान्य और विशेष गुण १२, एकेन्द्रिय-ग्राह्य, द्वीन्द्रिय-ग्राह्य और अतीन्द्रिय गुण १२।

**पांचकर्म**–१२, कर्म के लक्षण १३, कर्म के विभाजन का आधार १४।

**दो सामान्य**–१४, सामान्य का लक्षण १४–१५, सामान्य के भेद १५–१६, जाति और उपाधि १६, जाति में बाधक १६–१७।

**विशेष**–१७, विशेष के लक्षण १७–१८, विशेष की आवश्यकता और महत्ता १८–१९।

**समवाय**–१९, अयुतसिद्ध १९, अयुतसिद्ध के पाँच प्रकार २०, समवाय के सम्बन्ध में मतभेद २०, समवाय का महत्त्व और आवश्यकता २०–२१।

**चार अभाव**–२१, संसर्गाभाव और अन्योन्याभाव २१. अभाव का लक्षण और स्वरूप २२–२३, वैशेषिक सूत्रों में अभाव २३ ।

**पृथ्वी**–२४, पृथ्वी के लक्षण की परीक्षा २५, पृथ्वी के गुण २५–२६, पृथ्वी का विभाजन २६, विभाजन का स्पष्टीकरण २७, शरीर का लक्षण २८, इन्द्रिय का लक्षण २८–२९, विषय २९–३१ ।

**जल**–३१, जल का लक्षण ३१, जलीय शरीर ३२ ।

**तेज**–३२, तेज का विभाजन ३३, धातुओं का तैजस होना ३४ ।

**वायु**–३४, प्राण वायु ३६–३७, वायु का प्रत्यक्ष गम्यत्व ३७—३८, वायु की पृथक् सत्ता ३८–३९, सृष्टि का उत्पत्ति क्रम ३९–४०, परमाणुवाद ४०–४२, युनानी परमाणुवाद ४२–४३ ।

**आकाश**–४३, आकाश का लक्षण ४३–४४, आकाश की सत्ता ४४, आकाश अमूर्त भूत ४४–४५ ।

**काल**–४५, काल का लक्षण ४५—४६, काल का स्वरूप ४६ ।

**दिक्**–४६ दिक् का लक्षण ४७, दिक् और आकाश का अन्तर ४७–४८ ।

**आत्मा**–४८, आत्मा तथा परमात्मा की सत्ता ४९, आत्मा का लक्षण ४९–५०, ईश्वर की सिद्धि ५०–५३, ईश्वर का रूप और गुण ५३, आत्मा का परिमाण ५४, आत्मा का अनुमान ५४ ।

**मन**–५४, मन का लक्षण ५५, मन का परिमाण ५६, निद्रा की प्रक्रिया ५७–५८, मन का इन्द्रियत्व ५८–५९ ।

**रूप**–५९, रूप का लक्षण ६०, रूप ग्रहण की शर्तें ६०—६१, चित्र रूप का स्वातन्त्र्य ६१–६२, रूप और आकार ६२, रूप और आधुनिक विज्ञान ६२ ।

**रस**–६२ ।

**गन्ध**–६३ ।

**स्पर्श**–६३, चित्रगन्ध और चित्र स्पर्श ६४, बारह प्रकार के स्पर्श ६४ ।

**पाकज और अपाकज** ६५, पीलूपाक वाद ६६—६७, पिठरपाकवाद ६७–६८ ।

**संख्या** ६८, सामान्य गुण ६९, अपेक्षा बुद्धि ६९–७० ।

**परिमाण**–७१, चार परिमाण ७१ ।

**पृथक्त्व**–७१, पृथक्त्व का लक्षण ७२ ।

**संयोग**–७२ संयोग का लक्षण ७३, साधारण कारण ७३–७ ।

**विभाग**–७४ कर्मज विभाग और विभागज विभाग ७४–७५ ।

**परत्वापरत्व**–७५ ।

**गुरुत्व**–७५ ।

**द्रव्यत्व**–७६, गुरुत्व द्रव्यत्व में भेद ७६, सांसिद्धिक और नैमित्तिक द्रव्यत्व ७७ ।

**स्नेह**–७७, पिण्डीभाव का अर्थ ७७–७८ ।

**शब्द**–७८, शब्द के भेद ७९, वीचितरंगन्याय और कदम्बगोलकन्याय ७९–८० ।

**बुद्धि** ८०, बुद्धि का अर्थ ८०, बुद्धि का लक्षण ८१, ज्ञान के प्रकार ८२, स्मृति का लक्षण ८२, अनुभव ८३, विद्या अविद्या ८३ ।

**यथार्थानुभव**–८३, अनुभव के प्रकार ८४, प्रमा का लक्षण ८४–८५ ।

**चतुर्विध यथार्थानुभव**–८५, प्रमाण का लक्षण ८६–८७ ।

**करण**–८७, करण का लक्षण ८७–९० ।

**कारण**–९०, कारण का लक्षण ९०–९१, अनन्यथासिद्ध तथा अन्यथासिद्ध ९१–९२ ।

**कार्य**–९३, प्रतियोगी ९३–९४, कार्य–कारण–सिद्धान्त ९४, बौद्ध और वेदान्त मत ९४, सत्कार्यवाद ९४, सत्कार्यवाद की आलोचना ९५–९६, समवायी उपादान और निमित्त कारण ९६–९७।

**त्रिविध कारण**–९८, असमवायी कारण ९८–९९, निमित्त कारण के भेद ९९–१०० ।

**करण**–१०० ।

**प्रत्यक्ष**–१००, प्रत्यक्ष का लक्षण १०१–१०३, प्रत्यक्ष के भेद १०३–१०४, निर्विकल्पक ज्ञान के सम्बन्ध में बौद्धों और नैयायिकों का मतभेद १०४–१०६ ।

**षड्विध इन्द्रियार्थ संनिकर्ष**–१०७, संनिकर्षों का वर्गीकरण १०८–१०९, द्रव्य का ग्रहण ११०, प्रत्यक्ष के सम्बन्ध में मतभेद ११०–१११, अनुपलब्धि प्रमा १११–११२।

**अनुमान**–११२, परामर्श ११३–११४, अनुमिति ११४–११५, पक्षता११५–

११६, पक्ष-धर्मता ११६–११७, व्याप्ति ११७–११८, व्याप्ति के भेद ११८–११९ ।

**द्विविध अनुमान**–११९, स्वार्थानुमान और परार्थानुमान १२०–१२१, पूर्ववत्, शेषवत् और सामान्यतो दृष्ट १२१–१२२, केवलान्वयी, केवल-व्यतिरेकी और अन्वय-व्यतिरेकी १२२, आगमन तर्क और व्याप्ति १२२–१२४ ।

**पंचावयव**–१२४, भारतीय न्याय वाक्य और पाश्चात्य न्याय वाक्य १२५–१२६, व्याप्ति और उदाहरण १२७–१२८ ।

**लिंग परामर्श**–१२८, लिंग परामर्श की आवश्यकता १२८–१२९ ।

**त्रिविध लिङ्ग**–१२९, लिङ्ग १३०, अन्वय और व्यतिरेक १३१, केवलान्वयी १३१, केवल-व्यतिरेकी १३१, केवल-व्यतिरेकी पर आपत्ति और समाधान १३२–१३३, अर्थापत्ति और केवल-व्यतिरेकी १३३ ।

**पक्ष**–१३४ ।

**सपक्ष**–१३४ ।

**विपक्ष**–१३४, पक्ष का लक्षण १३४–१३५, सद्हेतु की शर्तें १३५–१३६ ।

**हेत्वाभास**–१३६, हेत्वाभास का अर्थ १३६, हेत्वाभास का लक्षण १३७, हेत्वाभासों की संख्या १३८ ।

**सव्यभिचार**–१३८, सव्यभिचार के भेद १३८, सव्यभिचार के भेदों का विवेचन १४०–१४१ ।

**विरुद्ध**–१४१ ।

**सत्प्रतिपक्ष**–१४२, सत्प्रतिपक्ष और प्रकरणसम १४२-१४३ ।

**त्रिविध असिद्ध**–१४३, असिद्ध का लक्षण १४४, असिद्ध के तीन भेदों में परस्पर भेद १४५–१४६, उपाधि १४७, उपाधि के चार प्रकार १४७–१४८ ।

**बाधित**–१४८, बाधित का लक्षण १४९ ।

**उपमान**–१४९, उपमान का करण १५०, उपमान का अनुमान में अन्तर्भाव १५१ ।

**शब्द**–१५१, शब्द बोध की नैयायिकों एवं मीमांसकों के अनुसार प्रक्रिया १५३–

१५४, शक्ति १५४–१५५, संकेत का ग्रहण १५५–१५६, बौद्धों का अपोहवाद १५७, वृत्ति १५७–१५८, अर्थज्ञान के साधन १५८, लक्षण १५८–१५९, व्यञ्जना १५९ ।

**वाक्यार्थ ज्ञानहेतु**–१६०, आकांक्षा, योग्यता और संनिधि १६०–१६१, तात्पर्यज्ञान १६१–१६२ ।

**द्विविध वाक्य**–१६२–१६२, वेदों का नित्यत्व या ईश्वरकर्तृत्व १६३–१६४, शब्द का नित्यत्व १६४ ।

**शब्दप्रमाण**–१५४–१६६, शब्दप्रमाण की स्वतन्त्रता १६६–१६७, **चार प्रमाणों** के अतिरिक्त प्रमाण १६७–१६८ ।

**स्वतः प्रमाण और परतः प्रमाण** १६८–१७० ।

**अयथार्थानुभव** १७०, संशय १७१, विपर्यय १७२, तर्क १७२, पाँच तर्क १७२–१७३ ।

**द्विविधस्मृति**–१७३ ।
**सुख**–१७४ ।
**दुःख**–१७४ ।
**इच्छा**–१७४ ।
**द्वेष**–१७४ ।
**प्रयत्न**–१७४ ।
**धर्म**–१७४ ।
**अधर्म**–१७४ ।
**आठ आत्मगुण**–१७५ ।
**त्रिविध संस्कार**–१७६ ।
**कर्म**–१७७ ।
**सामान्य**–१७७ ।
**विशेष**–१७८ ।
**समवाय**–१७८ ।

**अभाव**–१७८–१७९, अत्यन्ताभाव तथा अन्योऽन्याभाव का अन्तर १८०–१८१, प्रभाकर का अभाव के सम्बन्ध में मत १८१ ।

**उपसंहार**–१८२, दीपिका का उपसंहार १८२–१८४, पदार्थों का सप्तत्व

१८४, वेदवाक्यों का अर्थ १८५, जीवन का चरम लक्ष्य १८५–१८६ ।

**परिशिष्ट १**–बौद्धन्याय १८७–१९४ ।

**परिशिष्ट २**–जैनन्याय १९५–२०५ ।

**परिशिष्ट ३**–पाश्चात्यन्याय २०६–२१७ ।

**नामानुक्रमणी और उद्धरणानुक्रमणी**–२१८ ।

# सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची


| ग्रन्थनाम | लेखक | सम्पादक | प्रकाशन का स्थान तथा समय |
|---|---|---|---|
| अर्थशास्त्र | कौटिल्य | शामशास्त्री | मैसूर, १९०९ |
| कारिकावली (विश्वनाथ की मुक्तावली, महादेव-दिनकर की दिनकरी तथा रामरुद्र-राजेश्वर की रामरुद्रीय सहित) | विश्वनाथ | हरिरामशुक्ल | बनारस, १९५२ |
| काव्यप्रकाश (वी. आर. झलकीकर की टीका सहित) | मम्मटाचार्य | आर० डी० कर्मारकर | पूना, १९५० |
| किरणावली, भाग १ | उदयनाचार्य | शिवचन्द्र सार्वभौम | कलकत्ता, १९११ |
| किरणावली, भाग २ | उदयनाचार्य | नरेन्द्रचन्द्र वेदान्ततीर्थ | कलकत्ता, १९५६ |
| कुसुमाञ्जली | उदयनाचार्य | — | वाराणसी, सम्वत् २०१० |
| तर्ककौमुदी | लौगाक्षिभास्कर | — | मुंबई, १८८६ |
| तत्त्वार्थसूत्र | उमास्वाति | पण्डित सुखलाल | बम्बई, १९३० |
| दि सेक्रेड बुक्स ऑफ दि हिन्दूज वोल्यूम ६, दि वैशेषिक सूत्राज ऑफ कणाद (विद उपस्कार ऑफ शङ्करमिश्र) | कणाद | बी० डी० बसु | इलाहबाद, १९२३ |

| ग्रन्थनाम | लेखक | सम्पादक | प्रकाशन का स्थान तथा समय |
|---|---|---|---|
| न्यायकोश | म० म० भीमाचार्य झलकीकर | म०म० वासुदेवशास्त्री अभ्यङ्कर | पूना, १९२८ |
| न्यायबिन्दुटीका | धर्मोत्तराचार्य | पीटर पीटर्सन | कलकत्ता, १९२९ |
| न्यायसूत्र (वात्स्यायन-भाष्य-समेत) | गौतम | दिगम्बर शास्त्री जोशी | पूना, १९२२ |
| प्रशस्तपादभाष्य (श्रीधरभट्टप्रणीत-न्याय-कन्दली-समेत) | प्रशस्तपाद | दुर्गाधर झा शर्मा | वाराणसी, १९६३ |
| भाषापरिच्छेद (न्यायसिद्धान्तमुक्तावली सहित) | विश्वनाथ | पञ्चानन भट्टाचार्य | कलकत्ता, शकाब्द १८८४ |
| महाभारत-शान्तिपर्व | व्यास | रामचन्द्रशास्त्री किंजवेडकर | पूना, १९३२ |
| याज्ञवल्क्य-स्मृति | याज्ञवल्क्य | वासुदेव शर्मा | बम्बई, १९१८ |
| वैशेषिक-दर्शन | कणाद | अनन्तलाल ठाकुर | दरभङ्गा, १९५७ |
| वैशेषिकोपस्कार | शङ्करमिश्र | ——— | कलकत्ता, १९६१ |
| श्रीमद्वाल्मीकि-रामायण | वाल्मीकि | वासुदेव शर्मा | बम्बई, १९१५ |
| सप्तपदार्थी | शिवादित्य | अमरेन्द्रमोहन भट्टाचार्य | कलकत्ता, १९३४ |
| सर्वदर्शनसङ्ग्रह | सायण-माधव | वासुदेवशास्त्री अभ्यङ्कर | पूना, १९५१ |
| सिद्धान्तचन्द्रोदय | श्रीकृष्णधूर्जटि दीक्षित | ——— | बनारस, सम्वत् १९४२ |

## सहायक-पुस्तक-सूचि


क्रिटीक आफ् इन्डियन रियलिज्म —डॉ० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, आगरा, १९६४

ग्लीनिंग्ज फ्राम दि हिस्ट्री एण्ड बिबलियोग्राफी आफ् दि न्याय-वैशेषिक लिटरेचर —म० म० गोपीनाथ कविराज, कलकत्ता, १९६१

जर्नल आफ् रायल एशयाटिक सोसायटी —१९२९

जर्नल आफ् अमरीकन ओरियन्टल सोसायटी —१९११

दी पदार्थतत्त्वनिरूपणम् आफ् रघुनाथशिरोमणि
—कर्ल एच पॉटर, हारवर्ड येनचिंग इन्स्टीट्यूट स्टडीज़, १९५७

मैटिरियल फार दि स्टडी आफ् नव्यन्याय
—इंगाल्ज, हारवर्ड ओरियन्टल सीरीज, १९६१

मैत्रेय एज़ एन हिस्टारिकल पर्सनेज
—एच० हुई०, लैन्मैन स्टडीज़

सेन्ट्रेल फिलासफी आफ् बुद्धिज्म
—डॉ० टी० आर० वी० मूर्त्ति, लन्दन, १९६०

हिस्ट्री आफ् इन्डियन फिलासफी
—डॉ० उमेशमिश्र, इलाहाबाद, १९६१

हिस्ट्री आफ् इन्डियन फिलासफी भाग २
—डॉ० एस. राधाकृष्णन, लन्दन, १९४१

हिस्ट्री आफ् इन्डियन लाजिक
—महामहोपाध्याय सतीशचन्द्र विद्याभूषण, दिल्ली, १९७०

हिस्ट्री आफ् इन्डियन लिट्रेचर भाग २
—डॉ० मौरिस विन्तरनित्ज, कलकत्ता, १९३३

हिस्ट्री आफ् नव्य न्याय इन मिथिला
—डॉ० दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य, दरभङ्गा, १९५८

# अवतरणिका

महिमा अचिन्त्य है मानव के चिन्तन की ।
जिससे धारा बहती अजस्र दर्शन की ॥
धारा में से ही आती है प्रतिधारा ।
इस भाँति टूटती रुढिवाद की कारा ॥
श्रद्धा पाता आया है सदा पुरातन ।
पर तर्क नित्य नूतन का करता सर्जन ॥
प्राचीन सूत्र जब क्षीण पड़ा करते हैं ।
कुछ नये सूत्र दार्शनिक घड़ा करते हैं ॥
जिस भाँति नित्य नूतन भी सदा पुरातन ।
है उषा, उसी भाँति मानव का चिन्तन ॥

× × ×

"जो 'उसे' न जाने ऋचा करे क्या उसका"—[१]
सोचें तो होगा भला वचन यह किसका ?
यह स्वयं ऋचा के निर्माता की वाणी ।
निष्फल कहती श्रुति को श्रुति ही कल्याणी ॥
"जो दे अक्षर का ज्ञान 'परा' वह विद्या ।
है ऋग्वेदादिक केवल अपरा विद्या ॥"[२]
"यद्यपि पुरोहित अष्टादश हैं सम्बल ।
पर कर्ममयी यज्ञात्मक नौका निर्बल ॥"[३]

---

१. यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति—ऋग्वेद १.१६४.३९

२. तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः....अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते ।
—मुण्डकोपनिषद्, १.५.५

३. प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपा अष्टादशोक्तमवरं येषु कर्म ।
—पूर्ववत्, १.२.७

"जो परब्रह्म का ज्ञाता, तद्धित निष्फल
हैं वेद, बाढ़ में जैसे कुए का जल ।[1]
मानव-स्वतन्त्रता का प्रतीक यह चिन्तन ।
अङ्कुरित हुआ, तव वृक्ष बन गया दर्शन ।।
कुछ श्रौतमूल से जुड़े रहे कुछ टूटे ।
कैसे भी हों पर पौध तर्क के फूटे ।।

× × ×

संघर्ष और प्रतिद्वन्द्व बढ़ा जब आगे ।
तब तर्कशास्त्र के भाग्य और भी जागे ।।
जब पड़ी तर्क की श्रुति पर चोटें गहरी ।
तब जगे सनातन परम्परा के प्रहरी ।।
कुछ भौंचक्के हो लगे सोचने ऐसा—
"इस धर्मशास्त्र में दखल अकल का कैसा ?"[2]
"पाण्डित्य–प्रदर्शन द्वारा निन्दा श्रुति की,
जन्मान्तर में कारण गीदड़ की गति की ।।"[3]
पर निन्दा से क्या रुक जाता है चिन्तन ?
निन्दा बनती प्रत्युत प्रचार का साधन ।।
जिस पर जितना प्रतिबन्ध लगाया जाता ।
उतना ही बल उस धारा में है आता ।।

× × ×

---

१. यावानर्थं उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके ।
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ।। —गीता, २.४६.

२. धर्मशास्त्रेषु मुख्येषु विद्यमानेषु दुर्बुधाः ।
बुद्धिमान्वीक्षिकीं प्राप्य निरर्थं प्रवदन्ति ते ।।
—रामायण, अयोध्याकाण्ड १००.३९

३. अहमासं पण्डितको हैतुको वेदनिन्दकः ।
आन्वीक्षिकीं तर्कविद्यामनुरक्तो निरर्थकाम् ।
नास्तिकः सर्वशङ्की च मूर्खः पण्डितमानिकः ।
तस्येयं फलनिर्वृत्तिः शृगालत्वं मम द्विज ।।
—महाभारत, शान्तिपर्व, १८०.४७,४९

सो श्रुति-सम्मत मत के थे जो अनुयायी—
वेदानुसारिणी बुद्धि उन्हें भी भायी ।।
"है उचित, तर्क यदि वेदशास्त्र सम्मत हो।
है वही धर्म जो तर्कबुद्धिसंगत हो ।।"[१]
"क्या चौदह विद्याओं में न्याय नहीं है ?"[२]
"प्रत्युत सब विद्याओं का दीप यही है ।।
सब कर्मों का है तर्कशास्त्र ही साधन ।
सब धर्मों का है तर्कशास्त्र अवलम्बन ।।"[३]
सवथा उचित है तर्कशास्त्र की महिमा
सर्वथा उचित मानवबुद्धि की गरिमा ।।
बुद्धि से बढ़ कर कोई शास्त्र नहीं है ।
ब्रह्मोपलब्धिहित भी ब्रह्मास्त्र यही है ।।
इन्द्रियाँ हमारी ही दें हम को धोका ।
तो कौन हमारा मार्ग प्रदर्शक होगा ?
जो दीख रहा है वही यदि मिथ्या है,
कैसे निश्चय होगा कि सत्य फिर क्या है ?
जितना अनुभव है यदि प्रमाण सम्मत है,
उस द्वारा ज्ञात पदार्थवर्ग भी सत् है ।।[४]
जो भ्रान्ति बताते हैं सारी जगती को,
लगता है भ्रान्ति हुई है उनकी मति को ।।

× × ×

है ऐसा कुछ भी नहीं प्रमेय न जो हो।
न ऐसा ही कुछ है, अभिधेय न जो हो ।।[५]

---

१. आर्षं धर्मोपदेशञ्च वेदशास्त्राविरोधिना ।
यस्तर्केणानुसन्धत्ते स धर्म्मं वेद नेतरः ।। —मनुस्मृति, ११.१०६
२. पुराणन्यायमीमांसाधर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः ।
वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश ।। —याज्ञवल्क्यस्मृति, १.३
३. प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायः सर्वकर्म्मणाम् ।
आश्रयः सर्वधर्माणां शश्वदान्वीक्षिकी मता ।। —अर्थशास्त्र, अध्याय २
४. संविदैव हि भगवती वस्तूपागमे नश्शरणम् ।
—तात्पर्य्यटीका, २.१.३६.
५. षण्णामपि पदार्थानामस्तित्वाभिधेयत्वज्ञेयत्वानि ।
—प्रशस्तपादभाष्य, पृ. ४१

जो है उसको बुद्धि से तोला जाये ।
जो है उसको वाणी से बोला जाये ।।
जितने पदार्थ हैं सब बुद्धि परखेगी ।
उन पर अन्तिम निर्णय भी वह ही देगी ।।
कितनी रहस्यमय या निगूढ़ हो सत्ता ।
बुद्धि से बढ़ कर उसकी नहीं महत्ता ।।
यदि है अभेद्य अज्ञेय जगत् की सत्ता ।
तो शब्द शक्ति की भी है नहीं इयत्ता ।।
यदि दुर्गम और जटिल है मर्म प्रकृति का ।
तो मार्ग नहीं अवरुद्ध बुद्धि की गति का ।।
विश्लेषण द्वारा मर्म खुलेंगे सारे ।
मानव के यदि अनथक प्रयास न हारे ।।
अपने में यदि नर का विश्वास अटल है ।
हों जटिल प्रश्न, पर उत्तर सदा सरल है ।।

× × ×

हर ज्ञान कसौटी पर परखा जायेगा ।
सत्यानृत केवल अनुभव बतलायेगा ।।
है सत्य वही व्यवहार्य बने जीवन में ।
शशशृङ्ग न हों प्रतिपाद्य कभी दर्शन में ।।
व्यवहार और सिद्धान्त यदि मिल जायें ।
विज्ञान और दर्शन न पृथक् रह पायें ।।
विज्ञान चरण दे और दृष्टि दे दर्शन ।
अन्धे लंगड़े दोनों पा जायें जीवन ।।
है सत्य वही जो जीवन में जाये घट,
वह नहीं कि जिसको वेदों से लेवें रट ।।
परतः प्रमाण का गहरा भाव यही है—
जिसमें प्रवृत्तिसामर्थ्य सत्य वह ही है ।।[1]

× × ×

१. वात्स्यायनभाष्य, अवतरणभाष्य ।

चिन्तन-पद्धति ही न्याय कही जाती है ।[1]
यह सभी दर्शनों की समान थाती है ।।
इसलिये न्याय का लेते सब अवलम्बन,
है दृष्टि भेद का नामान्तर ही दर्शन ।।
भौतिक-तल पर करते कणाद विश्लेषण ।
है मनोभूमि पर कपिल-पतञ्जलि चिन्तन ।।
अध्यात्म-धरातल पर वेदान्त खड़ा है ।
है गम्य-एक सोपानों का झगड़ा है ।।
है स्वस्वरूप की प्राप्ति अभीष्ट सभी को ।
है जन्म मरण का चक्र अनिष्ट सभी को ।।
है आत्मतत्त्व द्रष्टव्य, ज्ञान है साधन ।
सबका समान है दुःखनिवृत्ति प्रयोजन ।।

× × ×

पर चार्वाक का पृथक् सर्वथा मत है–
कि आत्मतत्त्व ही नहीं उसे स्वीकृत है ।।
केवल वितर्क के बल का ले अवलम्बन ।
करता जयराशि सभी मतों का खण्डन ।।
प्रत्यक्षज्ञान भी मान्य नहीं है जिनको–
अनुमान मान्य होगा फिर कैसे उनको ?[2]
कुछ को केवल प्रत्यक्ष-ज्ञान सम्मत है ।
पर नहीं उन्हें अनुमान-ज्ञान स्वीकृत है ।।[3]
प्रत्यक्ष-गम्य लौकिक विषयों की अनुमिति
सम्भव है––कुछ लोगों की ऐसी सम्मति–
पर ईश, भाग्य या पुनर्जन्म है धोका,
इन विषयों का अनुमान न सम्भव होगा ।।[4]

---

१. तुलनीय––प्रमाणैरर्थपरीक्षणम्––वात्स्यायनभाष्य, न्यायसूत्र १.१.१.
२. यह मत 'पाषण्ड' कहलाता है ।
३. यह मत 'धूर्त' कहलाता है ।
४. यह मत 'शिक्षित' कहलाता है ।

इस भांति यद्यपि घोर नास्तिक दर्शन,
है चार्वाक, पर उसमें भी है चिन्तन ।।

× × ×

हैं जैन–बौद्ध भी वेदविरोधी ही मत ।
आगम-प्रमाण है किन्तु उनमें स्वीकृत ।।
इसलिये न्याय से बहुत मेल उनका है ।
वस्तुतः तर्क उनमें स्वतन्त्र पनपा है ।।
दिङ्नाग सदृश दिग्गज थे जिस दर्शन में,
वह क्यों न अग्रणी बनता फिर चिन्तन में ।।
आर्हत-दर्शन ने नयी तर्कपद्धति दी ।
कि स्याद्वाद ने नयी दिशा में गति की ।।
इनका स्वतन्त्रता परिचय है परम अपेक्षित ।
दोनों पर चर्चा लिखी पृथक् इस ही हित ।।[1]

× × ×

आगम प्रमाण में वेद प्रमाण जिन्हें हैं,
जैनों या बौद्धों से मतभेद उन्हें है ।।
उनमें मीमांसक सर्वप्रथम हैं आते,
जो वेदाज्ञा को परम धर्म बतलाते ।।
वेदाज्ञा का निर्णय जिस पद्धति द्वारा
होता हो, उसे उन्होंने 'न्याय' पुकारा ।।
अदृष्ट फलाश्रित वैदिक कर्म जटिल हैं ।
उनके विश्लेषण में वितर्क निष्फल हैं ।।
प्रामाण्य स्वतः श्रुति का मीमांसक सम्मत ।
है ज्ञान–मात्र भी स्वतः प्रमाण श्रुतिवत् ।।
नैयायिक मत में जग यथार्थतः सत् है—
इस बारे में मीमांसक भी सहमत है ।।
'समवाय' 'विशेष' न इष्ट कुमारिल को हैं—
हैं इष्ट पाँच अवशिष्ट रह गये जो हैं ।।

---

१. देखिये पृ. १८७ तथा १९५

चिन्तन-पद्धति ही न्याय कही जाती है।[1]
यह सभी दर्शनों की समान थाती है॥
इसलिये न्याय का लेते सब अवलम्बन,
है दृष्टि भेद का नामान्तर ही दर्शन॥
भौतिक-तल पर करते कणाद विश्लेषण।
है मनोभूमि पर कपिल-पतञ्जलि चिन्तन॥
अध्यात्म-धरातल पर वेदान्त खड़ा है।
है गम्य-एक सोपानों का झगड़ा है॥
है स्वस्वरूप की प्राप्ति अभीष्ट सभी को।
है जन्म मरण का चक्र अनिष्ट सभी को॥
है आत्मतत्त्व द्रष्टव्य, ज्ञान है साधन।
सबका समान है दुःखनिवृत्ति प्रयोजन॥

× × ×

पर चार्वाक का पृथक् सर्वथा मत है–
कि आत्मतत्त्व ही नहीं उसे स्वीकृत है॥
केवल वितर्क के बल का ले अवलम्बन।
करता जयराशि सभी मतों का खण्डन॥
प्रत्यक्षज्ञान भी मान्य नहीं है जिनको–
अनुमान मान्य होगा फिर कैसे उनको?[2]
कुछ को केवल प्रत्यक्ष-ज्ञान सम्मत है।
पर नहीं उन्हें अनुमान-ज्ञान स्वीकृत है॥[3]
प्रत्यक्ष-गम्य लौकिक विषयों की अनुमिति
सम्भव है––कुछ लोगों की ऐसी सम्मति–
पर ईश, भाग्य या पुनर्जन्म है धोका,
इन विषयों का अनुमान न सम्भव होगा॥[4]

---

१. तुलनीय––प्रमाणैरर्थपरीक्षणम्––वात्स्यायनभाष्य, न्यायसूत्र १.१.१.
२. यह मत 'पाषण्ड' कहलाता है।
३. यह मत 'धूर्त' कहलाता है।
४. यह मत 'शिक्षित' कहलाता है।

प्राभाकर-मत में हैं 'समवाय' स्वीकृत,
पर पृथक् पदार्थत्वेन 'अभाव' न ईप्सित ।।
अधिकरण रूप ही है अभाव––यह अभिमत ।
प्राभाकर–मत मे है विशेषतः स्वीकृत ।।
सादृश्य, शक्ति, संख्या–पदार्थ हैं नूतन,
जिनको स्वीकृत करता प्राभाकर-दर्शन ।।
चारों प्रमाण जो न्याय-विहित विश्रुत हैं,
प्राभाकर-मत में भी वे सब स्वीकृत हैं ।।
अर्थापत्ति एवम् अभाव नामक दो,
अभिमत प्रमाण अतिरिक्त कुमारिल-मत को ।।
हैं प्रथम तीन या चरम तीन जो अवयव,
उनसे सम्भव अनुमान, व्यर्थ पञ्चावयव ।।
केवल-व्यतिरेकी अर्थापत्ति में अन्तर्गभित है ।
उसका स्वतन्त्र प्रामाण्य अतः अनुचित है ।।
इन विषयों पर मतभेद न्यायदर्शन का,
मीमांसक-मत से पुरा काल से पनपा ।।

× × ×

हैं सांख्ययोग दोनों सहवर्ती दर्शन,
सत्कार्यवाद का करते जो प्रतिपादन ।।
कारण-प्रकृति से कार्य-विकृति आती है,
कहलाने को वह पृथक् कही जाती है ।।
पर कार्य और कारण में भेद नहीं है––
सत्कार्यवाद का मौलिक तत्त्व यही है ।।
गुण, कर्म और सामान्य धर्म हैं केवल,
है द्रव्य मात्र धर्मी ही, उनका सम्बल ।।
दोनों में कोई तात्त्विक भेद नहीं है,
औ धर्म-धर्मि-तादात्म्य-भाव यह ही है ।।
है पुरुष शुद्धचैतन्य, प्रकृति जड़रूपा,
त्रिगुणात्मक जिसकी शक्ति मूल सृष्टि का ।।
सत्कार्यवाद में कार्य भिन्न कारण से

हैं नहीं समर्थित; स्यात् इसी कारण से--
कारण 'प्रमाण' है 'प्रमा' कार्य का जैसे
होता प्रमाण का अर्थ प्रमा भी वैसे ।।
सत्कार्यवाद इस भाँति सांख्यदर्शन में,
है ओतप्रोत प्रायः समस्त चिन्तन में ।।
अनुमान-वीत एवम् अवीत--है द्विविध,
जिसमें माना उपमान साँख्य ने गर्भित ।।

× × ×

है ब्रह्म सत्य चिद्रूप, असत् जग सारा--
वेदान्तशास्त्र ने यही सदा स्वीकारा ।।
कारण से कार्य न भिन्न-साँख्य का यह मत--
वेदान्त शास्त्र को भी है यूं तो सम्मत ।।
पर कारण सत् है, कार्य सदा मिथ्या है--
इतना विवर्तमत का अभिप्राय नया है ।।
परमार्थ दृष्टि से कार्य न यद्यपि सत् है,
सत्कार्यवाद व्यवहार दृष्टि से सत् है ।।
है परामर्श ही अनुमति गौतम-मत में,
पर परामर्श अनिवार्य न शाङ्कर-मत में ।।
केवल-व्यतिरेकी अर्थापत्ति में अन्तर्गर्भित है ।
उसका स्वतन्त्र प्रामाण्य अतः अनुचित है ।।
अन्वय से हो अनुमान यही लाघव है,
अन्वयव्यतिरेकी मानें तो गौरव है ।।
परमार्थतत्त्व पर केवलान्वयी व्याप्ति,
लागू नहीं होती, अतः हुई अव्याप्ति ।।
हैं सभी वाच्य और ज्ञेय--न्याय का यह मत-
वेदान्त शास्त्र को नहीं रहा है अभिमत ।।
सो हुआ न्यायवैशेषिक मत का खण्डन
करने को 'खण्डन-खण्ड-खाद्य' का प्रणयन ।।

## नैयायिक और वैशेषिक लेखक

| लेखक | कृतियाँ | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| **कणाद**<br>(८० ई० से पूर्ववर्ती किन्तु प्राचीनता की सीमा अनिश्चित) | वैशेषिक सूत्र<br>( विशेष देखिये--दास गुप्ता, हिस्ट्री ऑफ् इन्डियन फिलासफी भाग १, पृ० २८०-२८५) | (१) इसमें आत्मा के विवचन में बौद्धों के **अनात्मवाद** का कोई उल्लेख नहीं किया गया।<br>(२) ८० ई० से पूर्ववर्ती लङ्कावतार-सूत्र (जिसे अश्वघोष ने उद्धृत किया है) में वैशेषिकों के **परमाणुवाद** का उल्लेख है।<br>(३) ८० ई० में चरक ने अपने **वैद्यक शास्त्र** का आधार वैशेषिक दर्शन को ही बनाया।<br>(४) वैशेषिक सूत्र में अनुमान के विवेचन में नैयायिकों के **पूर्ववत् और शेषवत्** का उल्लेख नहीं है। | (१) मीमांसकों के **धर्म, दृष्ट तथा शब्दों की नित्यता** सम्बन्धी सिद्धान्तों का विवेचन है।<br>(२) सांख्य-दर्शन के **प्रारम्भिक सिद्धान्तों** का उल्लेख है। |

| लेखक | कृतियां | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| **गौतम**<br>(अथवा मेधातिथि गौतम अथवा अक्षपाद)<br>(५५० ई० पू० से परवर्ती किन्तु ३०० ई० से पूर्ववर्ती) | न्यायसूत्र<br>(विशेष देखिये--विद्याभूषण, हिस्ट्री आफ् इन्डियन लाजिक, पृ० ५०) | १. परम्परा इन्हें ५५० ई० में मानती है।<br>२. ५५० ई० पू० के काल में सूत्र शैली प्रचलित थी।<br>३. ३०० ई० में वात्स्यायन इनके कुछ सूत्रों के अर्थ के सम्बन्ध में मतभेदों का उल्लेख करते हैं, अतः ये वात्स्यायन से पर्याप्त समय पहले हुए होंगे। | १. सांख्य, वैशेषिक, मीमांसा और बौद्ध दर्शन के ग्रन्थों में न्यायसूत्र के उद्धरण हैं। |
| **वात्स्यायन**<br>(३०० ई०) | न्यायभाष्य<br>(विशेष देखिये--जैकोबी, 'डेट्स आफ् दि फिलासफिकल सूत्राज् आफ् ब्राह्मणाज्,' जर्नल आफ् अमरीकन ओरियन्टल सोसायटी, १९११) | १. न्यायसूत्रों के विरुद्ध एक अनुमान-प्रक्रिया का ४८० ई० में वसुबन्धु ने उल्लेख किया है किन्तु वात्स्यायन इस तथ्य से अपरिचित हैं।<br>२. ५०० ई० में दिङ्नाग ने वात्स्यायन के मत का खण्डन किया है।<br>३. वात्स्यायन विज्ञानवाद के उस विकसित रूप से | १. ये न्यायसूत्र से कम से कम २०० वर्ष परवर्ती हैं क्योंकि इसमें अनेक सूत्रों के अर्थों के विषय में मत भेदों का उल्लेख है।<br>२. दूसरी शताब्दी के माध्यमिक शास्त्र के अनेक सिद्धान्तों का इसमें खण्डन किया है।<br>३. वात्स्यायन के न्यायसूत्र |

| लेखक | कृतियां | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| | | परिचित नहीं हैं, जो असङ्ग और वसुबन्धु के ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। | (४.२.२७) की व्याख्या में विज्ञानवाद का खण्डन किया है। |
| **प्रशस्तपाद**<br>(चतुर्थ शताब्दी ईस्वी) | पदार्थ-धर्म-संग्रह<br>(वैशेषिक सूत्र पर टीकात्मक स्वतन्त्र ग्रन्थ)<br>(धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, क्रिटीक आफ् इन्डियन रियलिज्म पृ० १०२) | १. उद्योतकर (छठी शती) ने इनका उल्लेख किया है।<br>२. दासगुप्ता के अनुसार ये दिङ्नाग से पूर्ववर्ती हैं। (देखिये—हिस्ट्री आफ् इडियन फिलासफी, भाग १, पृ० ३५१) | १. वात्स्यायन की अपेक्षा इनकी तर्क प्रणाली अधिक विकसित है।<br>२. कीथ के अनुसार इन्होंने अनेक सिद्धान्त दिङ्नाग से लिये हैं। |
| **उद्योतकर**<br>(छठी शताब्दी ईस्वी का अन्तिम चरण) | न्यायवार्तिक<br>(न्यायभाष्य पर टीका) | १. सुबन्धु ने वासवदत्ता में इसका नामनिर्देश किया है। (कीथ, हिस्ट्री आफ् संस्कृत लिट्रेचर, पृ० ३०८ पर सुबन्धु को सप्तम शताब्दी के पूर्वार्ध के अन्त में मानते हैं।) | १. इसमें दिङ्नाग के मत की आलोचना है। |

| लेखक | कृतियां | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| | | २. धर्मकीर्त्ति (६३५ ई०) उद्योतकर के मत का न्यायबिन्दु तथा प्रमाण-वार्तिक में उल्लेख करते हैं। | |
| **चन्द्रानन्द** (उद्योतकर के परवर्ती) | १. वैशेषिक सूत्र की टीका (गायकवाड ओरियन्टल सीरीज नं० १३६ बड़ौदा १९६१ में प्रकाशित) विशेष देखिये—उपर्युक्त प्रकाशन का सम्पादकीय) | १. इसकी शैली शंकर मिश्र के उपस्कार भाष्य से अधिक प्राचीन है। | |
| **वाचस्पति मिश्र** (८४१ ई०, तुलनीय—दि एज आफ् दि इम्पीरियल कन्नौज, भारतीय विद्याभवन पृ० २०४ **अथवा** ९७६ ई० तुलनीय-डी० सी० भट्टाचार्य, झा रिसर्च इन्स्टीट्यूट जर्नल भाग २, पृ० ३४९-५६) | तात्पर्य टीका (उद्योतकर के न्याय-वार्तिक पर धर्मकीर्ति द्वारा लगाने गये आरोपों का प्रत्युत्तर) | न्यायसूचि—निबन्ध का निर्माणकाल विक्रम सम्वत् ८९८ दिया गया है। | |

| लेखक | कृतियाँ | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| जयन्त | १. **न्यायमञ्जरी** (लोकायत, बौद्ध और मीमांसकों का खण्डन तथा न्यायदर्शन के सिद्धान्तों का संग्रह)<br>२. **न्यायकारिका** (सरस्वती भवन सीरीज, बनारस से प्रकाशित) | १. जयन्त के पुत्र अभिनन्द ने कादम्बरी कथासार के आमुख में जयन्त के पितामह शक्तिस्वामी को मुक्तापीड़ (ललितादित्य) नामक कश्मीर–नरेश (७५३ ई०) का मन्त्री बताया है। अतः जयन्त नवीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुए होंगे। यही लगभग वाचस्पतिमिश्र का काल है। (धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, उपर्युक्त ग्रंथ, पृ० ११४ तथा परवर्ती पृष्ट)<br>२. गोपीनाथ कविराज ने इस मत का खण्डन किया है कि जयन्त ने वाचस्पति मिश्र के उद्धरण दिये हैं। (ग्लीनिंग्ज फ्राम दि हिस्ट्री एण्ड बिबलियोग्राफी आफ् दि न्यायवैशेषिक लिट्रेचर पृ० १६-१७) | |

| लेखक | कृतियाँ | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| **भासर्वज्ञ** (८५७-९२५ ई०) (तुलनीय एस. सी०, विद्याभूषण, बिब्लयोथिका इन्डिका एडीशन, न्यायसार, जयसिंह सूरि (१४वीं शती) की न्यायतात्पर्य टीका सहित, पृ० ९) | न्यायसार (न्याय का प्रथम प्रकरण-ग्रन्थ) इस पर १८ टीका हैं। (विशेष देखिये--वी. सुब्रह्मण्य शास्त्री. भूमिका, मद्रास-संस्करण, न्यायसार, आनन्दानुभव (११५०–१२५० ई०) की टीका सहित) | १. उदयन (९वीं शताब्दी) ने इसका अपनी किरणावली (पृ० १९२) में खण्डन किया है। | १. वाचस्पति द्वारा इसका उल्लेख नहीं मिलता। |
| **शिरादित्य** (व्योमशिव से पूर्ववर्ती) | १. लक्षणमाला (अनुपलब्ध)<br>२. सप्तपदार्थी | व्योमशिव के अनेक सिद्धान्तों का पूर्वरूप सप्तपदार्थी में प्राप्त होता है। | |
| **व्योमशिव** | व्योमवती (प्रशस्तपाद के पदार्थधर्मसंग्रह की प्राचीनतम टीका) | | |
| **श्रीधर** (९९१ ई०) | न्यायकन्दली (पदार्थधर्म-संग्रह की टीका) | व्यधिकदशोत्तर–नव–शत शाकाब्दे न्यायकन्दली रचिता, यह न्यायकन्दली की पंक्ति है। | |

| लेखक | कृतियाँ | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| **उदयनाचार्य** (९८४ ई०) | १. आत्मतत्त्वविवेक–आत्मा का विवेचन<br>२. न्यायकुसुमाञ्जलि–ईश्वर की सत्ता की सिद्धि तथा ज्ञान और प्रमाण का विवेचन ।<br>३. न्यायपरिशिष्ट—जाति तथा निग्रहस्थान ।<br>४. न्याय-वार्तिक-तात्पर्यटीका-परिशुद्धि—न्यायसूत्र १.१.५ तक की तात्पर्यटीका (वाचस्पतिकृत) पर टीका<br>५. लक्षणावली—सप्त पदार्थों का विवेचन ।<br>६. किरणावली—पदार्थधर्म-संग्रह की अपूर्ण टीका । इसमें श्रीधर के मत की आलोचना है । | लक्षणावली में (पृ० १८८) ग्रन्थ का निर्माणकाल ९८४ ई० दिया है । | |

| लेखक | कृतियाँ | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| **शशधर** (११२५ ई०) (तुलनीय विद्याभूषण, हिस्ट्री आफ् इण्डियन लाजिक पृ० ३९६) | सिद्धान्तदीपिका—यह प्राचीन न्याय तथा नव्यन्याय के मध्य का प्रकरण ग्रन्थ है। | गङ्गेश ने इनके मत का खण्डन किया है। | उदयन के मत का इन्होंने 'केचित्' शब्द द्वारा निर्देश किया है। |
| **वरदराज** (११५० ई०) | तार्किकरक्षा | ११५७ ई० थोड़ा बाद में ही विष्णुस्वामी के शिष्य ज्ञानदेव ने इस पर लघुदीपिका नाम की टीका लिखी। | |
| **वल्लभाचार्य** (१२वीं शताब्दी) (तुलनीय-विद्याभूषण, हिस्ट्री आफ् इण्डियन लाजिक, पृ० ३८६) | न्यायलीलावती—वैशेषिक प्रकरण | १. १३वीं शताब्दी वर्धमान ने न्यायलीलावती–प्रकाश नाम की टीका लिखी।<br>२. यादववंशी चिंघण राजा (१२१०–१२४७ ई०) के समकालिक एक कन्नड कवि ने न्यायलीलावती का निर्देश किया है। | इसमें कीर्त्ति (धर्मकीर्त्ति) व्योमशिव, उदयन, भासर्वज्ञ, और भूषण का नामनिर्देश है। |
| **केशव मिश्र** (१२वीं शताब्दी) (तुलनीय- | तर्कभाषा—न्याय-वैशेषिक दर्शन का प्रकरण ग्रन्थ। | इसमें उदयन और श्रीधर के पारस्परिक मतभेद का उल्लेख है, अतः वह प्रचलित रहा होगा। | इसमें श्रीहर्ष के खण्डन-खण्डखाद्य (११७० से ११९४ ई०) का कोई उल्लेख नहीं। |

| लेखक | कृतियां | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| विद्याभूषण, हिस्ट्री आफ् इण्डियन लाजिक, पृ० ३८१) | | | |
| **मणिकण्ठ मिश्र** (गङ्गेश के पूर्ववर्ती) | न्यायरत्न (विशेष देखिये—डी० सी० भट्टाचार्य—हिस्ट्री आफ् नव्यन्याय इन मिथिला, पृ० ८४-८५। | गङ्गेश ने इनके मत की अनेक स्थानों पर आलोचना की है। | |
| **गङ्गेशोपाध्याय** (१३वीं शताब्दी) (तुलनीय, इंगाल्ज़, मैटिरियल फार दि स्टडी आफ् नव्यन्याय, पृ० ४) | १. तत्वचिन्तामणि—नव्यन्याय का प्रामाणिक ग्रन्थ।<br>२. लक्षणमञ्जरी—अप्रकाशित | | १. इसमें श्रीहर्ष के खण्डन-खण्ड-खाद्य (११७०–११९४ ई०) की आलोचना है।<br>२. गङ्गेश के पुत्र वर्धमान ने कुसुमाञ्जलि-प्रकाश १३००–१३६० ई० के बीच लिखा। |
| **वर्धमान** (गङ्गेश के पुत्र) १३००-१३६० ई० | १. न्यायनिबन्धप्रकाश—अपूर्ण उदयन की न्यायपरिशुद्धि पर टीका (सूत्र १.१.५ पर्यन्त)। | | |

| लेखक | कृतियां | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| | २. न्यायवि (?) शिष्टप्रकाश—उदयन की न्यायपरिशिष्ट पर टीका।<br>३. कुसुमाञ्जलिप्रकाश—उदयन की न्यायकुसुमाञ्जलि पर टीका।<br>४. किरणावलीप्रकाश—उदयन की किरणावली पर टीका।<br>५. न्यायलीलावतीप्रकाश—वल्लभाचार्य की न्याय-लीलावती पर टीका।<br>६-९. खण्डनप्रकाश, अन्वीक्षानयतत्त्वबोध, चिन्तामणिप्रकाश तथा तर्कभाषा की टीका—अप्रकाशित (उमेशमिश्र, हिस्ट्री आफ् इन्डिन फिलासफी भाग २, पृ० २७५-२८२) | | |
| **शङ्करमिश्र** (१४७३ ई०) (तुलनीय डी० सी० भट्टाचार्य, हिस्ट्री | १. भेदप्रकाश—अद्वैत का खण्डन और द्वैत का प्रतिपादन। | खण्डन टीका के एक प्रतिलिपिकार ने प्रतिलिपि करने का समय १४७३ ई० दिया है। | |

| लेखक | कृतियां | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| आफ् नव्यन्याय इन मिथिला, पृ० १४०) | २. खण्डनटीका—श्रीहर्ष की व्याख्या और खण्डन ।<br>३. कणादरहस्य—प्रशस्तपाद के आधार पर वैशेषिक सिद्धान्तों का परिचय तथा नव्यन्याय के व्याप्ति और उपाधि जैसे विषयों का विवेचन ।<br>४. वादविनोद—वादविवाद के नियम तथा कुछ समस्याओं का विवेचन ।<br>५. वैशेषिकसूत्रप्रकाश–वैशेषिक सूत्र टीका ।<br>६. लीलावतीकण्ठाभरण–वल्लभाचार्य की लीलावती पर टीका। इसमें वर्धमान की टीका से असहमति प्रकट की गयी है । | | |
| **वाचस्पति मिश्र द्वितीय** (१४१०-१४९० ई०) (तुलनीय डी० सी० भट्टाचार्य, हिस्ट्री | १. द्वैतनिर्णय<br>२. खण्डनोद्धार–खण्डनखण्ड-खाद्य का खण्डन । | | |

| लेखक | कृतियां | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| आफ् नव्यन्याय इन मिथिला, पृ० १४३-१५३) | | | |
| **जयदेव पक्षधर** (१५वीं शताब्दी का उत्तरार्ध) | १. आलोक—तत्त्वचिन्तामणि पर टीका।<br>२-९. न्यायलीलावतीविवेक, द्रव्यविवेक, प्रत्यक्षविवेक, अनुमानविवेक, गुणविवेक, चिन्तामणिविवेक, शशधर विवेक, तथा प्रमाणपल्लव—इन ग्रन्थों के उद्धरण मिलते हैं। | आलोक की रचना १४६५-१४७५ ई० के बीच हुई के (तुलनीय डी० सी० भट्टाचार्य, हिस्ट्री आफ् नव्यन्याय इन मिथिला, पृ० १२४) | |
| **रुचिदत्त मिश्र** (१५०५ ई०) | मकरन्द-न्यायकुसुमाञ्जलि पर वर्धमान की टीका पर टीका। | इन्होंने पक्षधर के आलोक की प्रतिलिपि १५०५ ई० में की। | |
| **गोपीनाथ ठक्कुर** (१५वीं शताब्दी का अन्त) (तुलनीय-उमेश मिश्र, हिस्ट्री आफ् इण्डियन फिलासफी, भाग २, पृ० ३४२) | मणिसार—तत्त्वचिन्तामणि एवं उस पर अन्य मतों का सार। | | |

| लेखक | कृतियां | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| **भागीरथ ठक्कुर (मेघ ठक्कुर)** (पक्षधर के शिष्य, रघुनाथ शिरोमणि के समकालिक) (तुलनीय—भट्टाचार्य, हिस्ट्री आफ् नव्यन्याय इन मिथिला पृ० १७२) | १. कुसुमाञ्जलि की टीका<br>२. प्रकाशिक—वर्धमान की न्याय-लीलावती—प्रकाश पर टीका (तुलनीय—उमेश मिश्र—हिस्ट्री ऑफ् इन्डियन फिलासफी, भाग २, पृ० ६५०) | | |
| **रघुनाथ शिरोमणि** (पक्षधर और वासुदेव सार्वभौम के शिष्य) (१४७५-१५७० ई०) (तुलनीय—इंगाल्स, मैटिरियल, फार दि स्टडी आफ् नव्यन्याय पृ० ९, तथा १८-१९) | १. दीधिति—तत्त्वचिन्तामणि पर अपूर्ण टीका।<br>२. पदार्थतत्त्वनिरुपण—न्यायवैशेषिक पदार्थों का विवेचन।<br>३. आत्मतत्त्व—विवेक—दीधिति—उदयन के बौद्ध मत के खण्डन पर टीका<br>४. किरणावलीप्रकाशदीधिति—उदयन की किरणावली पर वर्धमान की टीका पर टीका। | | |
| **हरिदास भट्टाचार्य** (१५९९ ई० से पूर्ववर्ती) | उदयन की कुसुमाञ्जलि-कारिका पर टीका | इनकी आलोक पर टीका की प्रतिलिपि १५९९ में की गई | |

| लेखक | कृतियां | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| (तुलनीय गोपीनाथ कविराज, ग्लीनिंग्ज़ फॉम दि हिस्ट्री एण्ड बिबलियोग्राफी आफ् दि न्याय-वैशेषिक लिटरेचर पृ० ५७) | | | |
| **महेश ठक्कुर** (१५२९-१५५७ ई०) (तुलनीय-उमेश मिश्र हिस्ट्री आफ् इण्डियन फिलासफी, भाग २, पृ० ३५५ ; इङ्गाल्स्, उपर्युक्त ग्रंथ, पृ० २२) | दर्पण–पक्षधर की आलोक टीका पर टीका | १. पक्षधरमिश्र के आलोक पर टीका।<br>२. रघुनाथशिरोमणि की दीधिति पर टीका। | |
| **जानकीनाथ भट्टाचार्य चिन्तामणि**<br>१. (१५५० ई०) (तुलनीय-विद्याभूषण, हिस्ट्री आफ् इण्डियन लाजिक, पृ० ४६६)<br>२. शिरोमणि के परिवर्ती (तुलनीय-उमेश मिश्र, उपयुक्त ग्रंथ पृ० ४२१)<br>३. (१५२९) (तुलनीय-इङ्गाल्स्, उपर्युक्त ग्रंथ, पृ० २२) | न्यायसिद्धान्तमञ्जरी–प्रमणों का विवेचन | | |

| लेखक | कृतियां | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| कृष्णदास सार्वभौम | १. १५२९ ई० इन्होंने जानकीनाथ चिन्तामणि को पत्र लिखा।<br>२. १५५७ ई० अकबर ने इन्हें सनद दी।<br>गदाधर की मृत्यु १७०९ में हुई और ये उनके गुरु थे।<br>३. डी० सी० भट्टाचार्य तथा म०म० हरप्रसाद शास्त्री के अनुसार प्रसिद्ध भाषा-परिच्छेद एवं उसकी टीका सिद्धान्तमुक्तावली भी इन्हीं की रचना है, विश्वनाथ ने केवल उस पर उल्लास टीका लिखी है। (तुलनीय—उमेश मिश्र, हिस्ट्री आफ् इन्डियन फिलासफी, भाग २, पृ० ४२२) | | |
| भावानन्द सिद्धान्तवागीश (१६वीं शताब्दी का अन्त) (तुलनीय—उमेश मिश्र, हिस्ट्री | तत्त्वचिन्तामणि पर टीका | | |

| लेखक | कृतियां | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| आफ् इण्डियन फिलासफी, भाग २, पृ० ४२६-४२८) | | | |
| **लौगाक्षि भास्कर** (१६०० ई०) (तुलनीय-वी० ए० रामास्वामी शास्त्री, इन्ट्रोडक्शन टू तत्त्वचिन्तामणि, पृ० ११२) | तर्ककौमुदी– प्रमाण का विवेचन । | | |
| **जगदीश मिश्र** (१६०१ ई० से पूर्ववर्ती) (तुलनीय–इङ्गाल्स्, उपर्युक्त ग्रन्थ, पृ० २२, उमेश मिश्र, हिस्ट्री आफ् इण्डियन फिलासफी, पृ० ६५२) | १. रघुनाथ की तत्त्वचिन्तामणि–दीधिति पर टीका<br>२. सूक्ति–प्रशस्तपाद के पदार्थ–धर्मसंग्रह पर टीका<br>३. दीधिति–न्यायलीलावती पर टीका ।<br>४. शब्दशक्तिप्रकाश––न्याय दृष्टि से शब्दशक्ति पर विचार ।<br>५. तर्कामृत–प्रारम्भिक छात्रों लिये । | | |

| लेखक | कृतियां | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| **मथुरानाथ तर्कवागीश** (१६००-१६७५) (तुलनीय-इंगाल्ज़, उपर्युक्त ग्रन्थ, पृ० २३ तथा २५-२७) | १. बौद्धधिक्कारवृत्ति—उदयन के आत्मतत्त्वविवेक पर टीका।<br>२. तत्त्वचिन्तामणिरहस्य — गङ्गेश के ग्रन्थ पर टीका।<br>३. तत्त्वचिन्तामणिदीधिति-रहस्य-तत्त्वचिन्तामणि पर रघुनाथ की टीका पर टीका।<br>४. आख्यातवादविवृति— रघुनाथ के आख्यातवाद पर टीका। | | |
| **हरिराम तर्कवागीश** (गदाधर भट्टाचार्य के के गुरु) १६२५ ई०. (तुलनीय—गोपीनाथ कविराज, ग्लीनिंग्ज़ फ्राम दि हिस्ट्री एण्ड बिबलिओग्राफी आफ् दि न्यायवैशेषिक लिट्रेचर, पृ० ६८–६९। | १. ज्ञानलक्षणविचार रहस्य<br>२. अनुमितेर्मान–सत्त्व–विचार–रहस्यम्।<br>३. मुक्तिवादविचार<br>४. प्रामाण्यवाद<br>(तुलनीय—उमेशमिश्र, उपर्युक्त ग्रंथ, पृ० ४३३. | | |

| लेखक | कृतियां | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| **गदाधर भट्टाचार्य** (१६५० ई०) (तुलनीय–गोपीनाथ कविराज, उपर्युक्त ग्रंथ) | दीधिति और तत्त्वचिन्तामणि पर अन्तिम टीकायें। लगभग १ दर्जन अन्य ग्रन्थ (देखिये, उमेशमिश्र, उपर्युक्त ग्रंथ पृ० ४४०)। | | |
| **जयराम न्यायपञ्चानन** १६५७ ई० ( तुलनीय––उमेशमिश्र, हिस्ट्री आफ् इन्डियन फिलासफी भाग २ पृ० ४३७) | न्यायसिद्धान्तमाला—न्यायसूत्र के निम्नसूत्रों पर टीका– १.१.९––१२, १४–४१; २.२. १–१९; ५.२.१, ४, १२–१४, १८, २०–२२, २४–२५. १. न्यायवृत्ति––न्यायसूत्र पर टीका। | | |
| **विश्वनाथ न्यायसिद्धान्त पञ्चानन** (१६५४ ई०) | २. भाषापरिच्छेद और उस पर सिद्धान्तमुक्तावली टीका भी इन्हीं की मानी जाती थीं, यद्यपि अब वे कृष्णसार्वभौम की मानी जाती हैं। (ऊपर | | |

| लेखक | कृतियां | प्राचीनता के प्रमाण | अर्वाचीनता के प्रमाण |
|---|---|---|---|
| | कृष्णसार्वभौम देखिये) | | |
| **अन्नम्भट्ट**<br>१६२५–१७००<br>(अथल्ये और बोडास, इन्ट्रोडक्शन टू तर्कसंग्रह, पृ० LV । | तर्कसंग्रह तथा उस पर तर्क-दीपिका टीका।<br>(ये दोनों इस ग्रन्थ में मुद्रित हैं।) | | |

## बौद्धनैयायिक

| लेखक | कृतियां |
|---|---|
| **नागार्जुन**<br>दूसरी शती ई० का अन्त (विन्टर-नित्स, हिस्ट्री आफ् इन्डियन लिटरेचर भाग २ पृ० ३०४ तथा ६३१–६३२) | १. प्रज्ञामूल<br>२. शून्यतासप्तति<br>३. युक्तिषष्टिका<br>४. व्यवहारसिद्धि<br>(१–४) शून्यवाद का विवेचन<br>५ विग्रहव्यावर्तिनी<br>६. वैदल्यसूत्र<br>(५–६) तर्क तथा प्रमाण |
| **आर्यदेव**<br>(नागार्जुन का शिष्य) | चतुःशतक–माध्यमिक दर्शन का ग्रन्थ |
| **मैत्रेयनाथ**<br>(२७० ई०–३५० ई०)<br>योगाचार मत के संस्थापक | १. महायानसूत्रालङ्कार<br>२. मध्यान्तविभङ्ग<br>३. धर्मधर्मताविभङ्ग<br>४. उत्तरतन्त्र<br>५. अभिसमयालङ्कार |
| **असङ्ग**<br>३१० ई०–३९० ई०<br>मैत्रेयनाथ के शिष्य<br>(जर्नल आफ दि रायल एशियाटिक सोसायटी, १९२९, प्रो० टुची, बुधिस्ट लाजिक बिफोर दिङ्नाग, पृ० ४५१-४८८) | १. योगाचारभूमि–शास्त्र<br>२. अभिधर्मसमुच्चय<br>३. महायानसंग्रह<br>४. तत्त्वविनिश्चय–उत्तरतन्त्र पर टीका<br>५. सन्धिनिर्मोचन सूत्र पर टीका<br>६. महायानसम्परिग्रह<br>७. प्रकरणार्यवाचाशास्त्र<br>८. महायानाभिधर्मसंगीतिशास्त्र |
| **वसुबन्धु** | १. अभिधर्मकोश |

| लेखक | कृतियां |
|---|---|
| ३२० ई०–४०० ई०<br>(एच-हुइ, मैत्रेय एज् एन हिस्टोरिकल पर्सेनेज) | २. विंशतिका<br>३. त्रिंशतिका<br>४. त्रिस्वभावनिर्देश<br>५. वादविधि<br>६. उपायहृदय<br>७. तर्कशास्त्र |
| **दिङ्नाग**<br>४०० ई०<br>वसुबन्धु का शिष्य | १. प्रमाणसमुच्चय (तथा उस पर वृत्ति)<br>२. हेतुचक्रहमरु<br>३. प्रमाणशास्त्रन्यायप्रवेश<br>४. आलम्बनपरीक्षा (तथा उस पर वृत्ति)<br>५. त्रिकालपरीक्षा |
| **धर्मपाल**<br>६०० ई०–६३५ ई० | १. आलम्बन–प्रत्यय–ध्यान–शास्त्र–व्याख्या<br>२. विद्यामात्रसिद्धिशास्त्रव्याख्या<br>३. शतशास्त्रवैपुल्यव्याख्या |
| **धर्मकीर्त्ति**<br>६३५ ई०–६५० ई० | १. प्रमाणवार्तिक (तथा उस पर वार्तिक)––प्रमाणसमुच्चय की टीका<br>२. न्यायबिन्दु<br>४. हेतुबिन्दु<br>५. सम्बन्धपरीक्षा<br>६. वादन्याय<br>७. सन्तानान्तरसिद्धि |
| **मनोरथनन्दी**<br>धर्मकीर्त्ति का समकालिक | प्रमाणवार्तिक पर टीका |

| लेखक | कृतियां |
|---|---|
| (तुलनीय—राहुल सांकृत्यायन, भूमिका, प्रमाणवार्तिक, पृष्ठ त.) | |
| **शान्तिदेव**<br>६९१ ई०–७४३ ई०<br>(तुलनीय–टी० आर० वी० मूर्ति, सेन्ट्रल फिलासफी आफ् बुद्धिज्म, पृ० ८७,१००–१०१) | १. शिक्षासमुच्चय<br>२. बोधिचर्यावतार |
| **प्रज्ञाकर गुप्त**<br>७०० ई० (तुलनीय—राहुल सांकृत्यायन, भूमिका, माणवार्तिक पृष्ठ त) ९४० ई० (विद्याभूषण, ए हिस्ट्री आफ् इन्डियन लाजिक पृ० ३३६) | प्रमाणवार्तिकालङ्कार प्रमाण-वार्तिक पर टीका |
| **विनीतदेव**<br>७०० ई० | धर्मकीर्ति के निम्न ग्रन्थों पर टीका : न्यायबिन्दु–हेतुबिन्दु, वादन्याय सम्बन्धपरीक्षा तथा सन्तानान्तर सिद्धि |
| **जिनेन्द्रबोध**<br>७२५ ई० | प्रमाणसमुच्चय पर विशालाम - वती नामक टीका |
| **शान्तरक्षित**<br>७४९ ई० | १. वादन्यायवृत्तिविपञ्चितार्थ— धर्मकीर्त्ति के वादन्याय पर टीका<br>२. तत्त्वसंग्रहकारिका |
| **कमलशील**<br>७५० ई० | तत्त्वसंग्रहकारिका पर टीका |
| **धर्मोत्तर**<br>८४७ ई० | १. धर्मकीर्त्ति के न्यायबिन्दु पर टीका<br>२. प्रमाणपरीक्षा |

| लेखक | कृतियां |
| --- | --- |
| | ३. पारलोकसिद्धि |
| | ४. प्रमाणविनिश्चयटीका |
| **अर्चट** | हेतुबिन्दुविवरण |
| ८०० ई० | |
| **जेतारि** | १. हेतुतत्त्वोपदेश |
| ९४० ई०–९८० ई० | २. धर्मधर्मिविनिश्चय |
| | ३. बालावतारतर्क |
| **मोक्षाकर गुप्त** | तर्कभाषा |
| ११०० ई० | |

## जैननैयायिक

| लेखक | कृतियां |
|---|---|
| उमास्वाति या उमास्वामी<br>प्रथमशताब्दी ईस्वी | तत्त्वार्थाधिगम सूत्र |
| सिद्धसेनदिवाकर<br>४८० ई० ५५० ई० | न्यायावतार<br>सन्मतितर्क सूत्र |
| जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण<br>५२८ ई०–५८८ ई० | विशेषावश्यकभाष्य |
| सिद्धसेन गणि<br>छठी शताब्दी ई० | तत्त्वार्थाधिगमसूत्र पर टीका |
| देवनन्दी (पूज्यपाद)<br>५ शती–७ शती | तत्त्वार्थाधिगमसूत्र पर सर्वार्थ-सिद्धि नामक टीका |
| समन्तभद्र<br>छटी शताब्दी ई० | आप्तमीमांसा |
| अकलङ्क<br>लगभग ७५० ई० | १. तत्त्वार्थवार्तिक सभाष्य<br>२. अष्टशती–आप्तमीमांसा की टीका<br>३. लघीयस्त्रय<br>४. न्यायविनिश्चय |
| विद्यानन्द<br>लगभग ८०० ई० | अष्टसहस्त्री––आप्तमीमांसा पर टीका |
| माणिकानन्दी<br>लगभग ८०० ई० | परीक्षामुखसूत्र |
| प्रभाचन्द्र<br>लगभग ८२५ ई० | प्रमेयकमलमार्तण्ड |

| लेखक | कृतियां |
|---|---|
| अनन्तवीर्य<br>लगभग १०३९ ई० | प्रमेयरत्नमाला |
| देवसूरि<br>१०८६ ई०—११६९ ई० | प्रमाणनयतत्त्वालोकालङ्कार |
| हेमचन्द्रसूरि<br>१०८८ ई०–११७२ ई० | प्रमाणमीमांसा |
| हरिभद्रसूरि<br>लगभग ११२० ई० | १. न्यायप्रवेशसूत्र<br>२. न्यायावतारवृत्ति |
| मल्लिषेणसूरि<br>१२९२ ई० | स्याद्वादमञ्जरी |
| यशोविजयगणि<br>१६०८ ई० १६८८ ई० | १. न्यायप्रदीप<br>२. तर्कभाषा<br>३. न्यायरहस्य<br>४. न्यायामृततरङ्गिणी<br>५. न्यायखण्डखाद्य |